International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(6): 186-191

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(6): 186-191
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-11-2022
Accepted: 10-12-2022

शिवओम हरि
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
शिवओम हरि
शोध छात्र, संस्कृत विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

शतपथ ब्राह्मण साहित्य का वर्ण्य विषय

शिवओम हरि

प्रस्तावना

शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मणग्रन्थ है । शतपथ ब्राह्मण, शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं (माध्यान्दिन तथा काण्व) में उपलब्ध है । दोनों ही शाखाओं की प्रतिपाद्य विषय-वस्तु समान है, केवल क्रम में कुछ भिन्नता है । विषय की एकरूपता की दृष्टि से माध्यन्दिन-शतपथ अधिक व्यवस्थित है । इसका एक अन्य वैशिष्ट्य यह है कि वाजसनेयि-संहिता के अठाहरवें अध्यायों की क्रमबद्ध व्याख्या इसके प्रथम नौ अध्यायों में मिल जाती है । केवल पिण्ड-पितृयज्ञ का वर्णन संहिता में दर्शपूर्णमास के अनन्तर है । समस्त ब्राह्मण-ग्रन्थों के मध्य शतपथ ब्राह्मण सर्वाधिक बृहत्काय है । ब्राह्मण ग्रन्थों में इसे सर्वाधिक प्रमाणिक माना जाता है ।

शतपथ ब्राह्मण के आदि उपदेष्टा महर्षि याज्ञवल्क्य थे । इसमें सौ अध्याय तथा १४ काण्ड हैं । सौ अध्याय होने से ही सम्भवतः इसका शतपथ नाम पड़ा है । इसमें दर्शपौर्ण मास आदि सभी श्रौत यज्ञों के विधि विधानों की विस्तृत व्याख्या की गई है तथा यजुर्वेद को इस ब्राह्मण के ज्ञान के बिना समझना असम्भव ही है । इसके अन्तिम भाग का नाम ही वृहदारण्यक उपनिषद है जिसमें ब्रह्म विद्या का विशद् वर्णन है । यह यजुर्वेद का एक प्रकार का प्राचीन भाष्य है जो ज्ञान विज्ञान की सभी विधाओं को अपने अन्दर समेटे हुए है।

ब्राह्मण साहित्य में ज्ञान विज्ञान का प्रचुर स्रोत प्राप्त होता हैं । जो अपने स्वरुपानुसार कर्मकाण्ड, दर्शन एवं आध्यात्म जैसे विषयों का विस्तृत विवेचन करते हैं । ब्राह्मण ग्रन्थों में कर्मकाण्ड का वर्णन प्राप्त होता तथा इसके साथ साथ मंत्रों के विनियोग की व्याख्या भी मिलती है । तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में याज्ञिक प्रक्रिया के पीछे कुछ और गम्भीर रहस्य हैं जहाँ याज्ञिक क्रियाएं कुछ अन्य ही महत्वपूर्ण तथ्यों की और संकेत करती हैं ब्राह्मण भाग केवल याज्ञिक विषयक तथ्यों का ही प्रकाशन नहीं करते अपितु वहाँ दार्शनिकता के पल्लव भी अधिकता से प्राप्त होते हैं ।

महाभाष्यकार पतञ्जली ने ब्राह्मण ग्रन्थों को परिभाषित करते हुए लिखा है कि चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों एवं महर्षियों ने जो वेदों के व्याख्यान किए हैं, वे ब्राह्मण ग्रन्थ कहलाते हैं- चतुर्वेदविद्भिर्ब्रह्माभिर्वा ह्यणै महर्षिभिः प्रोक्तानि यानि वेदव्याख्यानानि तानि ब्राह्मणानीति[१] ।।

स्वामी देव दयानंद ने ऋग्वेदादिभाव्य भूमिका में वेद संज्ञा विचार में कहा है कि- ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नही हो सकते क्योंकि वे ईश्वररोक्त नही है । ये महर्षि लोगो के वेद वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ हैं ।

ब्राह्मण ग्रन्थ इतिहास पुराण, कला गाथा तथा नराशंसी है । वेदों के व्याख्यान भूत ब्राह्मणादि ग्रन्थों ने मन्त्रों की विस्तृत एवं प्रतीकात्मक व्यख्यायें की है जैसे- यज्ञों वै विष्णु राष्ट्र वै अक्षमेधः आदि । निरुक्तकार ने भी लिखा है ब्राह्मणेन रूपसम्पन्नाः विधियते । अर्थात ब्राह्मण ग्रन्थों के द्वारा मन्त्र रूप सम्पन्न किए जाते हैं किस मन्त्र का किस क्रिया हेतु विनियोग होना चाहिए इसका प्रतिपादन ब्राह्मण ग्रन्थों के द्वारा किया जाता है ।
ब्राह्मण ग्रन्थों में मुख्य रूप से अनन्त ज्ञान का भण्डार शुक्ल यजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण में प्राप्त होता है। इसको आधार बनाकर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया गया । शतपथ ब्राह्मण सम्पूर्ण वैदिक जगत् में महत्वपूर्ण ग्रन्थ है इसमें यज्ञ विद्या अपने पूर्ण वैभव के साथ वर्णित है ।

शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं के शतपथ-ब्राह्मण के काण्डों का विषय –

माध्यन्दिन-शतपथ –

माध्यन्दिन शतपथ-ब्राह्मण में १४ काण्ड, १०० अध्याय, ४३८ ब्राह्मण तथा ७६२४ कण्डिकाएँ हैं ।

हविर्यज्ञम् - इस काण्ड में दर्श और पूर्णमास इष्टियों का प्रतिपादन है ।

एकपदिप - इस काण्ड में अग्न्याधान, पुनराधान, अग्निहोत्र, उपस्थान, प्रवत्स्यदुपस्थान, आगतोपस्थान, पिण्डपितृयज्ञ, आग्रयण, दाक्षायण तथा चातुर्मास्यादि यार्गो की मीमांसा की गई है ।

अध्वरम् - इस काण्ड में दीक्षाभिषवपर्यन्त सोमयाग का वर्णन है ।

ग्रहनाम - इस काण्ड में सोमयोग के तीनों सवनों के अन्तर्गत किये जाने वाले कर्मों का, षोडशीसदृश सोमसंस्था, द्वादशाहयाग तथा सत्रादियागों का प्रतिपादन हुआ है ।

सवम् - इस काण्ड में वाजपेय तथा राजसूय यागों का वर्णन है ।

उपासम्भरणम् - इस काण्ड में उषासम्भरण तथा विष्णुक्रम का विवेचन हुआ है ।

हस्तिघटक - इस में चयन याग, गार्हपत्य चयन, अग्निक्षेत्र-संस्कार तथा दर्भस्तम्बादि के दूर करने तक के कार्यों विवेचन हुआ है ।

चितिः - इस काण्ड में प्राणभृत् प्रभुति इष्टकाओं की स्थापनाविधि वर्णित है ।

संचितिः - इस काण्ड में शत्रुद्रिय होम, धिष्ण्य चयन, पुनश्चितिः तथा चित्युपस्थान का निरूपण हैं ।

अग्निरहस्यम् - इस काण्ड में चिति-सम्पत्ति, चयनयाग स्तुति, चित्यपक्षपुच्छ-विचार, चित्याग्निवेदि का परिमाण, उसकी सम्पत्ति, चयनकाल, चित्याग्नि के छन्दों का अवयवरूप, यजुष्मती और लोकम्पृणा आदि इष्टकाओं की संस्था, उपनिषदरूप से अग्नि की उपासना, मन की सृष्टि, लोकादिरूप से अग्नि की उपासना, अग्नि की सर्वतोमुखता तथा सम्प्रदायप्रवर्तक ऋषिवंश प्रभृति का विवेचन हुआ है ।

अष्टाध्यायी (संग्रह) - इस काण्ड में आधान-काल, दर्शपूर्णमास तथा दाक्षायणयज्ञों की अवधि, दाक्षायण यज्ञ, पथिकृदिष्टि, अभ्युदितेष्टि, दर्शपूर्णमासीय द्रव्यों का अर्थवाद, अग्निहोत्रीय अर्थवाद, ब्रह्मचारी के कर्त्तव्य, मित्रविन्देष्टि, हविः-समृद्धि, चातुर्मास्यार्थवाद, पंच महायज्ञ, स्वाध्याय-प्रशंसा, प्रायश्चित्त, अंशु और अदाभ्यग्रह, अध्यात्मविद्या, पशुबन्ध-प्रशंसा तथा हविर्याग के अवशिष्ट विधानों पर विचार किया गया है ।

मध्यमम् (सौत्रामणी) - इस काण्ड में सत्रगत दीक्षा-क्रम, महाव्रत, गवामयनसत्र, अग्निहोत्र-प्रायश्चित्त, सौत्रामणीयाग, मृतकाग्निहोत्र तथा मृतकदाह प्रभृति विषयों का निरूपण है ।

अश्वमेधम् - इस काण्ड में अश्वमेध, तदगत प्रायश्चित्त, पुरुषमेध, सर्वमेध तथा पितृमेध का विवरण है ।
बृहदारण्यकम् -- इस काण्ड में प्रवर्ग्यकर्म, धर्म-विधि महावीरपात्र, प्रवर्ग्योत्सादन, प्रवर्ग्यकर्तृक नियम, ब्रह्मविद्या, मन्थ तथा वंश इत्यादि का प्रतिपादन हुआ है। इसी काण्ड में बृहदारण्यक उपनिषद भी है ।

काण्व-शतपथ

काण्व-शतपथ में १७ काण्ड, १०४ अध्याय, ४३५ ब्राह्मण तथा ६८०६ कण्डिकाएं हैं ।

एकपात्-काण्डम् - इस काण्ड में आधान-पुनराधान, अग्निहोत्र, आग्रयण, पिण्डपितृयज्ञ, दाक्षायण यज्ञ, उपस्थान तथा चातुर्मास्य संज्ञक यागों का विवेचन है ।
हविर्यज्ञ काण्डम् -- इस काण्ड में पूर्णमास तथा दर्शयागों का प्रतिपादन है ।

उद्धारि काण्डम् - इस काण्ड में अग्निहोत्रीय अर्थवाद तथा दर्शपूर्णमासीय अर्थवाद विवेचित हैं ।
अध्वरम् -- इस काण्ड में सोमयागजन्य दीक्षा का वर्णन है।

ग्रहनाम - इस काण्ड में सोमयाग, सवनत्रयाग कर्म, षोडशी प्रभृति सोमसंस्था, द्वादशाहयाग, त्रिरात्रहीन दक्षिणा, चतुस्त्रिंशद्धोम और सत्रधर्म का निरूपण है ।
वाजपेय काण्डम् -- इस काण्ड में वाजपेययाग का विवेचन है ।

राजसूय काण्डम् - इस काण्ड में राजसूय का विवेचन है।

उखासम्भरणम् - इसमें उखा-सम्भरण का विवेचन है ।

हस्तिघट काण्डम् - इस काण्ड से लेकर १२वें काण्ड तक विभिन्न चयन-याग निरुपित हैं ।

चिति काण्डम् - इसमें विभिन्न चयन-याग निरुपित हैं ।

साग्निचिति - इसमें विभिन्न चयन-याग निरुपित हैं ।

अग्निरहस्यम् - इसमें विभिन्न चयन-याग एवं अग्नि के रहस्य का वर्णन हैं ।

अष्टाध्यायी - इस काण्ड में आधान काल, पथिकृत इष्टि, प्रयाजानुयामन्त्रण, शंयुवाक्, पत्नीसंयाज,
ब्रह्मचर्य, दर्शपूर्णमास की शेष विधियों तथा पशुबन्ध का निरूपण है ।

मध्यमम् - इस काण्ड में दीक्षा-क्रम, पृष्ठयाभिप्लवादि, सौत्रामणीयाग, अग्निहोत्र-प्रायश्चित्त,
मृतकाग्निहोत्र आदि का वर्णन हुआ है ।

अश्वमेध काण्डम् - इस काण्ड में अश्वमेध यज्ञ का वर्णन हुआ है ।

प्रवर्ग्य काण्डम् - इसमें सांगोपाङ्ग प्रवर्ग्यकर्म

बृहदारण्यकम् - इसमें ब्रह्मविद्या का विवेचन किया गया है।

शतपथ ब्राह्मण का विषय

शुक्ल यजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण में अनेक विषय देखने को मिलते हैं जहां पर ज्ञान विज्ञान के अनेको स्थल प्राप्त होते है वहां पर उनका कहीं सूत्र रूप में तो कहीं विस्तार से विवेचना की गई है । विषयों की दृष्टि से यह ग्रन्थ समृद्ध होता हुआ सभी ब्राह्मण ग्रंथों में शीर्ष स्थान रखता है । भट्टाचार्यजी सुकमारी की पुस्तक जो आंग्ल भाषा में उधृत है जिसका नाम iterature in vedic age उसमें इस बात की पुष्टि होती है ।

One the Latest Brahmans, the Satapatha Brahmana is especially valuable because it is a repository of many myths, Presents a rich and varied picture of social customs and beliefs with elements of history and geography, a storehouse of metaphysical, cosmogonic and philosophical speculations which cleary anticipate its last section, the Brhadaranyaka upanisad"[२]

शतपथ ब्राह्मण में विवेचित विषयों पर दृष्टि डालने से इससे सम्बन्धित अनेकानेक महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आते हैं जिनका वर्णन हम कमशः एक एक विषय के अनुसार करेंगे –

शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ का स्वरूप

शतपथ ब्राह्मण में यागानुष्ठान का सर्वोत्तम वर्णन प्राप्त होता है । जहां पर हर्वियज्ञ से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञिय क्रियाकलापों का साङ्गोपांग वर्णन और विवेचन मिलता है।

शतपथ ब्राह्मण के अनेक स्थलों पर यज्ञ विधान अत्यन्त सूक्ष्म तथा विस्तृत वर्णन किया गया है हमें क्रिया-विनियोगों की व्याख्या के प्रसंग में यज्ञ के उत्कृष्ट स्वरूप के दर्शन होते हैं अतः हम यह कह सकते है कि शतपथ ब्राह्मण यज्ञानुष्ठान का वर्णन करने सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है । शतपथ ब्राह्मण के यज्ञीय अनुष्ठानों बुद्धदेव विद्यालंकार ने यज्ञ का लक्षण प्रस्तुत किया है-

> कल्याणार्थिना सामुदायिक योगक्षेममुद्दिश्य समुदायाद्भुत "क्रियामाणङ्ग यज्ञः[३]

अर्थात- "कोई कल्याणार्थी अपने आपको समुदाय का अंग मानकर जिस समुदाय का वह अंग हो उसके सामुदायिक योगक्षेम-सिद्धि के लिए जो कर्म करता है, वह यज्ञ है । शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म बताया गया है "यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म"[४] यज्ञ विषयक विस्तृत विवेचना प्रस्तुत करते हुए बुद्धदेव विद्यालंकार ने शतपथ ब्राह्मण के निम्नलिखित वचन को उधृत किया है "देवाश्च वा असुराश्च उभये प्राजापत्याः पस्पृधिरे ततो देवा अनुव्यमिवासुरथहासुरा मेनिरेऽस्माकमेवेदं खलु भुवन मिति । ते होचु हन्ते माम्प्रथिवीं विभाजामहै तां विभन्योप जीवामेति तामौणैश्चम्मर्भिः पश्चात् प्राञ्चोविभाजमाना अभियुः तद्वैः देवा: शुश्रुवुः विभजन्ते ह वा इमामसुराः

पृथिवीम्प्रेततदे ष्यामो यत्रेममसुरा विभजन्ते के ततः स्याम यदस्ये न भजेमहीति ते यज्ञमेव विष्णुम्पुस्कृत्येयुः । ते यज्ञमेव विष्णुम्पुस्कृत्येयुः ते होचुः अनुनोअस्यामपृथिव्याम् भजतास्वेव नोअप्यस्याम्भाग इति ते हासुराः असूयन्त इवोचुः यावदेवैष विष्णुराभिशेते तावद्वो दध्म इति । वामनो ह्व विष्णुरास तद्देवा न जिहीडिरे महद्वै नो यज्ञसम्मितमदुरिति"[५] अर्थात-

देव और असुर इन दोनों प्रजापति की सतानों में परस्पर संघर्ष था । देव चुप साधकर पड़े थे । असुरों ने समझा चलो अब तो सब धरती हमारी है, अब इसे बाँट लें और बाँटकर भोगें, सो लगे वृष चर्म लेकर पूर्व पश्चिम धरती नापने । यह वृत्तान्त देवों ने भी सुना कि असुर लोग धरती का बटवारा कर रहे हैं। बोले, चलो जहां धरती बटती है । हमें कुछ न मिलेगा, तो हमारी क्या गति होगी सो ये यज्ञरूप बिष्णु को आगे करके चले । वे बोले भाई, इस धरती में कुछ भाग हमारा भी तो है । असुरों ने झुंझलाते हुए कहा, अच्छा-अच्छा, यह विष्णु जितने में लेट जावें उतना तुम्हें भी दे देगें । विष्णु था तो वामन ही, पर देव लोग इससे बिल्कुल नहीं घबराए । वे मन ही मन बोले इन्होंने जो हमें यज्ञ के नाम की धरती दे दी सो बहुत दे दी । उपर्युक्त प्रसंग में हम सबके ध्यान देने योग्य बात यह है कि देख लोग यज्ञ के नाप की धरती मांगते थे और असुर अपने वृक्षचर्म के नाप की । इसके द्वारा शतपथकार ने हमें बता दिया कि उसकी दृष्टि में देव कर्म क्या है और आसुर कर्म क्या है । सामुदायिक योगक्षेमं पुरस्कृत्य क्रियामाणं कर्म इति देव है और इसका उल्टा स्वार्थाय क्रियामाणं कर्म असुर है[६] वस्तुतः यज्ञों में दृश्यमान क्रिया-विनियोगादि तो उसका गौण स्वरूप है परन्तु यज्ञों का मुख्य ध्येय आत्मसंस्कार है यज्ञों का मुख्य उद्देश्य आत्म संस्कार है तथा उनका क्रिया कलाप उसके मुकाबले में अतिगौण स्थिति रखता है ।[७]

शतपथ का निम्न वचन भी आत्मयाजी को देवयाजी की अपेक्षा श्रेष्ठ मानता है – तदाहुः आत्मयाजी श्रेयान् देवयाजी इति[८] यज्ञ में देवयाजी का, सिर्फ क्रियाकलाप में मग्न रहने वाले का कोई महत्व नहीं है, उसे यज्ञ का वास्तविक लाभ नही मिलता । महत्व उसी का है जो आत्मयाजी है। यज्ञ में होने वाले क्रिया कलापों के वास्तविक रहस्य को समझकर अपनी आत्मा की उन्नति करता है । यज्ञ के विषय में पण्डित बुद्धदेव का उक्त कथन ने न केवल शतपथ में विवेचित यज्ञिय स्वरूप को उद्घाटित किया है अपितु व्यापक अवधारणा को भी प्रस्तुत किया है ।

शतपथ ब्राह्मण में उपलब्ध दार्शनिक विषयों का महत्व

जैसा कि पूर्वोक्त में ही कहा गया है कि शतपथ ब्राह्मण अनेक प्रकार के विषयों से आपूर्ण है । उसके अनुसार इस ब्राह्मण ग्रन्थ में दार्शनिक विषयों से सम्बंधित विवेचना भी उपलब्ध होती है । अद्यपि शतपथ ब्राह्मण एक "दार्शनिक ग्रन्थ नही है तथापि इसमें सृष्टयुत्पत्ति जैसे गम्भीर विषयों का विवेचन भी प्राप्त होता है । बाह्मण ग्रन्थ में प्रजापति को सृष्टि के प्रमुख कारक के रूप में बताया गया है-

उदाहरण-: 1. प्रजापतिर्ह वाऽइदं ग्रऽएक एवास । स ऐक्षत कथं नु प्रजायेयेति सोऽश्राम्यत् स तपोऽतप्यत[९] । "
२. प्रजापतिर्वाऽइदमग्रऽआसीत्[१०] ।
3. प्रजापति वाऽएतेनाग्रे यज्ञेनेजे[११]
4. प्रजापति र्ह वाऽइदमग्रऽसक एवास[१२] ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते है कि शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक सन्दर्भ प्राप्त होते है जो ग्रन्थ में विद्यमान दार्शनिकता का परिचय देते हैं ।

शतपथ-ब्राह्मण के प्रमुख सुभाषित रूप

वैदिक साहित्य में सूक्तियों एवं सुभावित के माध्यम से सारगर्भित उपदेशों की शिक्षा प्रदान करने की शैली अत्यंत प्राचीन है । शास्त्रों से उद्धृत सूक्तियों के माध्यम से सदा ही मानव जीवन के उज्ज्वल पथ का प्रदर्शन किया जाता रहा है शतपथ ब्राह्मण में ऐसी अनेक सूक्तियों के निर्देश प्राप्त होते है जो विविध समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं । " न श्वः मुपासीत को ही मनुष्यस्य श्वो वेद[१३] "- अर्थात कल की उपासना नहीं करनी चाहिए, कोई भी मनुष्य कल को नहीं जानता है । प्रत्येक व्यक्ति आने वाले कल के स्वर्णिम स्वप्नों को सजाने में रत है । वह श्वः की आशाओं में तल्लीन है जिसके कारण वह अद्य को नष्ट कर रहा है, यहां याज्ञवल्क्य का उक्त कथन अत्यन्त सटीक प्रतीत होता है कि मनुष्य को कल की उपासना का त्याग करके शक्ति तथा समय को नष्ट किए बिना शुभ अवसर को कदापि नही खोना चाहिए । शतपथ की यह सारगर्भित सूक्ति जीवन की सफलताओं का मन्त्र है । " निरुक्तं वा एनः कनीयो भवति[१४] " - अर्थात तप से लोको को जीतते हैं । मार्ग में आने वाली अनेक विपदाओं को सहते हुए कर्म पथ पर आगे बढ़ते रहने का उपदेश करने वाला शतपथ का उक्त वचन मानव जीवन की समस्याओं का निवारण करने वाला मन्त्र है । विद्वासो हि देवा:[१५] - अर्थात विद्वान ही देव है[१६] | यास्ककृत निरुक्त में भी देव शब्द का स्पष्टीकरण करते हुए बताया गया है - दान करने से दीपन करने से द्योतन करने से अथवा द्युलोक में निवास करने से । अर्थात दान दीपन तथा प्रकाशन अथवा धुलोक में वास यह 'देव' का लक्षण है देवों दानाद्वा दीपनाद्वा घोतया द्वा द्युस्थानो भवतीति वा यो देवः सा देवता[१७] ।

सः यः सत्यं वदति यथाग्निं समिध्दं तं घृतेनाभिषिञ्चेत एवं हैनं स उद्दीपयति[१८] । - अर्थात जो सच बोलता है, मानो वह अग्नि पर भी घी छिड़कता है । क्योंकि उससे वह उसको प्रज्जविलित करता है । उसका दिन-प्रतिदिन तेज बढ़ता रहता है[१९] ।

यो वै न सुनोति व यजते तं निर्ऋतिं गच्छति[२०] अर्थात जो सोमयाग या अन्य यज्ञ नहीं करता वह पाप उसी के पास जाता है[२१]।

इस प्रकार शतपथ ब्राह्मण में सूक्तिवाक्यों के अतिरिक्त अनेकानेक वाक्य यत्र तत्र प्राप्त होते हैं ।

शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ के प्रमुख निर्वचन

शतपथ-ब्रह्मण में यज्ञीय अनुष्ठानों के क्रिया-विनियोगों के साथ ही प्रसंग के अनुसार प्राप्त अनेक महत्वपूर्ण शब्दों का निर्वाचन भी प्राप्त होता है जिनमें कुछ उदाहरण प्राप्त होते हैं जैसे –

आहुति – "स वै यः सोऽताग्निरेव सः" तस्मिन् यत्किचाभ्यदधाति आहितय एवास्य ता आहितयो ह वै ता आहुतय इत्या चक्षते[२२] अर्थात" यह जो खाने वाला है वह अग्नि ही है। जो कुछ उसमें रखते हैं यह इसकी आहुति है अहिति को ही 'आहुति' कहते हैं[२३] ।

अध्वर - देवान्ह वै यज्ञेन यजमानात्सपत्ना असुरा दधर्षा चक्रुस्ते दुधूर्षन्त एव न शेकर्धूर्वितुं ते परावभूवस्तस्माद्यज्ञोऽध्वरो नाम[२४] अर्थात- जब देव यज्ञ कर रहे थे तो उनके शत्रु असुरों ने उस यज्ञ का विध्वस करना चाहा – । परंतु विध्वंस की इच्छा करते हुए भी वे विध्वंश न कर सके । वे हार गए । इसलिए यज्ञ का नाम अध्वर हुआ[२५] ।

पुरुष - इमे वै लोका पूः अयमेव पुरुषः । योऽयं पवते। सो सोऽस्या शेते तस्मात् पुरुषः[२६]

अर्थात् "ये लोक पुर हैं और पुरुष वह है जो बहता है, वह इस पुर में लेटा है, इसलिए वह पुरुष है"[२७]

सोम -स्वा वै मऽएषेति तस्मास्सामो नाम[२८] अर्थात् यह मेरा ही है (स्वा वै म) सोम हो गया[२९]

यजमान - यद्यजते यजमानः[३०] अर्थात् यज्ञ करता है इसलिए यज्ञमान हो जाता है[३१]।

उपर्यक्त विवेचन से यह शतपथ ब्राह्मण के यज्ञ विषयक निर्वचनों से यह ज्ञात होता है कि यज्ञीय क्रियाओं की व्याख्या करते हुए ग्रन्थकार ने एक एक शब्द पर विशेष ध्यान दिया है।

शतपथ ब्राह्मण में प्राप्त प्रमुख आख्यान - शतपथ ब्राह्मण में मन्त्रों के विनियोगों की व्याख्या के प्रसंग में अनेक आख्यान प्राप्त होते हैं ये आख्यान यज्ञ देवता सृष्टयुत्पत्ति, धर्म तथा नीति आदि अनेक विषयों से सम्बंधित है । कतिपय आख्यानों का नामोल्लेख निम्न है-

- इन्द्र वृत्रासुर आख्यान[३२]
- त्रिशीर्षा विश्वरूप आख्यान[३३]
- देवासुर संग्राम आख्यान[३४]
- सुपर्णी एवं कद्रु आख्यान[३५]
- वाक् तथा मनस् संवाद[३6]
- मनु तथा मत्स्य आख्यान[३7]
- पुरुरवा तथा उर्बशी आख्यान[३8]

शतपथ ब्राह्मण में प्राप्त उक्त आख्यानों के विश्लेषण में अनेक प्रतीकात्मक सूत्र मिलते है जैसे इन्द्र वृत्रासुर आख्यान में चराचर जगत के दो महत्वपूर्ण तथ्यों शुक्ल "तथा "कृष्ण" को भी उपस्थित किया गया है जिस प्रकार वर्ष- के दो 'अयन उत्तरायण तथा दक्षिणायण, मास के दो पक्ष शुक्ल एवं कृष्ण एवं दिन के दो भाग प्रातः तथा सायं होते हैं - इससे पूर्व का पर प्रकाश का बोधक है तथा प्रकाश उत्तरवर्ती अन्धकार से सम्बन्धित है तथैव उक्त आख्यान में इन्द्र को "ज्योति"[३९] गया है । पाप को सदैव अन्थकार का ही प्रतीकात्मक स्वरुप प्राप्त होता है । शतपथ ब्राह्मण के विभिन्न विषयों का अध्ययन करने पर हमें व्यापक विषयवस्तु का ज्ञान होता है जिसमें अनेक "क्रिया विनियोगों के क्रम में अतीव महत्वपूर्ण विवेचन किया गया है जो प्रत्येक काल में प्रत्येक व्यक्ति के लिए किसी ना किसी रूप में अवश्य ही उपयोगी है ।

संदर्भ

1. महाभाष्य – ५/१/१
2. भट्टाचार्यजी सुकमारी literature in vedic age, page -22
3. शतपथ ब्राह्मण, भूमिका, बुद्धदेव विद्यालंकार पृष्ट 38
4. शतपथ ब्राह्मण, 4/7/1/5
5. शतपथ ब्राह्मण1/2/5/
6. विद्यालंकार "शतपथ, प्रथम काण्ड भूमिका पृष्ट - 38
7. विद्यालंकार "शतपथ, प्रथम काण्ड भूमिका पृष्ट - 64
8. शतपथ ब्राह्मण 11/2/6/5/3
9. श. ब्रा. 2 । 2 । 4 । 1
10. श. ब्रा. 6 । 1 । 3 । 1
11. श. ब्रा. 2 । 4 । 4 । 1
12. श. ब्रा. 2 । 4 । 4 । 1, 2 । 5 । 1 । 1
13. श. ब्रा. 2 । 1 । 3 । 1
14. श. ब्रा. 2 । 5 । 2 । 20
15. श. ब्रा. 3 । 7 । 3 । 10
16. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 2 पृष्ट 217
17. निरुक्त 7 । 5

18. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 2 पृष्ट 217
19. श. ब्रा. 7 । 2 । 1 । 1
20. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 2 पृष्ट 217
21. श. ब्रा. 10 । 6 । 2 । 2
22. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 2 पृष्ट 685
23. श. ब्रा. 1 । 4 । 1 । 40
24. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 1 पृष्ट 349
25. श. ब्रा. 3 । 1 । 4 । 22
26. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 2 पृष्ट 384
27. श. ब्रा. 3 । 1 । 4 । 22
28. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 1 पृष्ट 523
29. श. ब्रा. 3 । 2 । 1। 17
30. गंगाप्रसाद ,श. ब्रा. ,भाग 1 पृष्ट 341
31. श. ब्रा. 1 । 1 । 3 । 5
32. श. ब्रा. 1 । 2 । 3 ।1-5
33. श. ब्रा. 3 । 6 । 1 । 2
34. श. ब्रा. 1 । 4 । 5 । 8-13
35. श. ब्रा. 1 । 8 । 1 । 1
36. श. ब्रा. 1 । 8 । 1 । 1
37. श. ब्रा. 4 । 6 । 7 । 11 । 8 । 5 । 3 । 2
38. श. ब्रा. 4 । 6 । 7 । 11 ,8 । 5 । 3 । 2